ORIGINAL RESEARCH PAPER

Education

KEY WORDS:

सुमित्रानंदन पंत के निबन्धों में नये मूल्य की अवधारणा

डॉ. मृगेन्द्र सिंह तोमर

अतिथि विद्वान शासकीय महाविद्यालय–पोरसा जिला मुरैना (म.प्र.)

नये मूल्य की अवधारणा सुमित्रानंदन पंत का, उनके अतःप्रकाश से पोषित मौलिक अवदान है। इसी को नव मानवता का विकास तथा अन्तश्चेतनवाद भी कहा जाता है। पंल्लव काव्य संग्रह प्रकाशन के पश्चात ही पंतजी को जीवन मन तथा आत्मा एवं स्वतंत्र, व्यापक अर्न्तदृष्टि प्राप्त हो गई थी। इस अर्न्तदृष्टि को उन्होंने रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी रामतीर्थ, महात्मा गांधी तथा श्री अरविन्द के विचारों एवं दर्शन से पोषित किया था। उनके इस चिन्तन पर तत्युगीन सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियों तथा जीवशास्त्रीय सिद्धान्तों का भी प्रकाश पड़ा था।[1]

विज्ञान ने मानव जीवन की निष्क्रिय परिस्थितियों को नयी गति देकर, पिछले आदर्शों एवं मान्यताओं से ही, जीवन सुविधाओं को उपलब्ध कराने का प्रयास किया था। अणु–परमाणु के विस्फोट ने यह सिद्ध कर दिया है कि जड़, शक्ति तत्व का मूर्त रुप है। यह जड़–शक्ति मानव सभ्यता के विकास में निर्मायक है। मानव चेतना जड़ के किमाकार वक्षस्थल पर अधिकार प्राप्त कर, अपने अन्तःस्वरुप के अनुरुप जड़ जगत के ढांचे को अपने आर्थिक, राजनीतिक तंत्रों, नैतिक नियमों, सामाजिक सम्बन्धों, रागात्मक मर्यादाओं, विभिन्न संस्कृतियों, समस्त सभ्यताओं तथा धर्मो के मूल्यों को नवीन विश्व जीवन के व्यापक पटल पर संयोजित करेगी। प्राचीन आदर्शों में बद्ध, रहन–सहन की पद्धतियों में जड़ीभूत, बासी, निस्वाद जीवन वस्तु को नयी चैतन्य ज्योति, नये भाव, संवेदन, नये सौन्दर्य बोध नयी राग सम्पदा की गरिमा से मण्डित करेगी। पिछले युग की खर्व मानवता को अतिक्रमित कर, एक नवीन, भू जीवन प्रेमी प्रज्ञा दीप्त मानवता इसी पृथ्वी पर विचरण करेगी ।[2]

नव मानवता का विकास, विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय से ही सम्भव है। आज का मानव भौतिक विज्ञान की उपलब्धियों के मद में उन्मत होकर आत्म विनाश के कगार पर खड़ा है। आज की मानव चेतना, विगत युगों की मान्यताओं तथा रुढ़ि–रीतियों में आबद्ध निष्क्रिय और पंगु बन गई है। मनुष्य के अन्तर्मन में स्थित जाति–पांति, धर्म–सम्प्रदाय, आचार–विचार और नैतिक दृष्टिकोणों की अंधदीवारें विश्व मानवता के विकास में बाधक बन रही हैं। विज्ञान मात्र मनुष्य के बाह्य जीवन का ही निर्माण कर सकता हैं, हमारी बौद्धिक प्रक्रियाओं को तीव्र बना सकता है। नवीन मानवता के उपादानों का उसे ज्ञान नहीं है। हृदय के क्षेत्र से वह अनभिज्ञ है। वह मानव हृदय की न रचना का सकता है, न उसका संस्कार कर सकता है। विज्ञान ने हमारे भौतिक परिवेश तथा रहन सहन की परिस्थितियों का रुपान्तर कर उनका परिष्कार अवश्य किया है, पर वह मनुष्य के अन्तस्तल में प्रवेश कर, उसके हिंस्र–बर्बर पशु तत्व का उन्नयन कर उसे सुसंस्कृत तथा उदात्त नहीं बना सकता है। मनुष्य के अन्तःसत्य का बोध प्राप्त करने के लिए उसे वैयक्तिक तथा सामूहिक रुप से विश्व जीवन में मूर्त तथा प्रतिष्ठित करने के लिये, हमें समदिक् दृष्टि विकसित करना है; विज्ञान के साथ ही अन्य ऊर्ध्वचेतना तथा सांस्कृतिक अनुष्ठानों का सहयोग भी लेना है।[3]

मानव सभ्यता और संस्कृति के रुपान्तरण हेतु राग चेतना का परिष्कार एवं उन्नयन करना है। इस गुह्यत्तम सूक्ष्म तत्व को अपनी लिंग्म अनुभूति, मानवीय संवेदना तथा स्वस्थ सौन्दर्य बोध के द्वारा अभिव्यक्त कर, विश्व प्राणों के विराट स्वरुप में स्थापित करना है। मनुष्य को अपने रागात्मक

सम्बन्धों को उन्नत, विकसित तथा अन्तःशुद्ध कर, प्रेम का सम्बन्ध स्थापित करना है। नयी राग चेतना के अन्तर्गत, कायिक मूल्य को स्त्री–पुरुष सम्बन्धी नवीन सामाजिक भाव मूल्य में विकसित करना है, जिसमें नारी भाव काया–बोध की इकाई न रहकर, विकसित सौन्दर्य–बोध बन जावे; काम मूल्य का उन्नत सामाजिक प्रेम मूल्य में रुपान्तरण हो जावे, जिससे नारी, उन्नत सामाजिक स्तर पर मानव प्रेम की प्राणप्रद सौन्दर्य सुरभित भावना का उपयोग कर सके। स्त्री–पुरुष के राग–सम्बन्ध को एक नवीन गरिमा तथा मानव जीवन को एक नया मूल्य, काया–बोध को एक नवीन गरिमा प्रदान करना है। तभी तपःपूत, राग भावना, बहिर्मुखी होकर, उदात्त मानवता, समदिक व्यापी जीवन का रुप ग्रहण कर, मानव प्रीति संग्रथित, विराट सामाजिक सौष्ठव में साकार होगी। स्त्री–पुरुष सामाजिक मूल्य के रुप में विकास करने से, काम भी वृहत्तर सामाजिक संस्कार, सौन्दर्य, संयम, तथा सांस्कृतिक मुक्ति के रुप में परिणत हो जायेगा।[4]

भू जीवन को भागवत जीवन बनाने के लिये, जीवन आकांक्षाओं का पुनर्मूल्यांकन कर, विगत मूल्यों को अधिक व्यापक बनाना है। सृष्टि के मूल में जो भागवत चेतना है, उसे विकास क्रम में मनुष्य के जीवन सामाजिक जीवन तथा विश्व जीवन में मूर्त करना है। भागवत साक्षात्कार एक दीर्घ, विकासशील सामाजिक प्रक्रिया है। इन्द्रिय जीवन और भागवत जीवन में विरोध नहीं है। सुसंस्कृत, संतुलित इन्द्रिय जीवन में ही भागवत जीवन का साक्षात्कार हो सकता है। जगत जीवन और भू क्षेत्र को ब्रह्म की मूर्तिमान वास्तविकता में परिणत करना ही युग सत्य है। ऐसे अन्तः संगठित जीवन में राग द्वेष, लोभ, मोह, क्रोध, अहंकार आदि दुष्प्रवृत्तिया निर्मूल हो जायेगी।[5]

ईश्वर अक्षय एवं अनन्त है। वह अपनी शाश्वत क्षमताओं में प्रत्येक कल्प में नित्य नये रुपों में विकसित होता है। नये जीवन में नये मूल्य के प्रतिष्ठित हो जाने पर हमारे ईश्वर बोध में भी अन्तर आ जावेगा। भक्ति ज्ञान और कर्म के मूल्यों का मौलिक रुपान्तर हो जावेगा। हम ईश्वरीय एकता के सन्निकट जी सकेगें।[6]

आज विश्व में नये मूल्य अवतरण की अतीव सम्भावनाएँ हैं। विश्व विभिन्न देशों में समागम, उनके मन में नयी प्रेरणाओं, नयी भावनाओं को नये विचारों के जन्म दे रहा है। विश्व के धार्मिक विश्वास, नैतिक प्रतिमान सांस्कृतिक मूल्य, जीवन पद्धतियाँ, कला–शिल्प, सौन्दर्य बोध, आपस में मिलकर नवीन रुप धारण कर रहे हैं। पुरानी मान्यताएँ विघटित होकर नये मूल्यों को जन्म दे रही है। साधारण व्यक्ति भी 'सर्वभूतेषुचात्मानम' तथा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को आत्मसात करने का प्रयास कर रहा है। आज विश्व के परम्परागत ऐन्द्रिय अतीन्द्रिय साधन, तप, कृच्छ, नैतिक, बौद्धिक दृष्टिकोण, विकसित होकर नवीन मानववादी विश्व दृष्टि में समाहित हो रहे हैं। मानव एकता मानव सामनता की भूमि पर अवतरित होकर, सघन मूर्त तथा वास्तविक आयाम ग्रहण कर रही हैं, अन्तर्राष्ट्रीय विश्व जीवन का रुप ग्रहण कर रही है। विभिन्न जाति–पांति, वर्ण धर्म में विभाजित मानव उन सीमाओं को अतिक्रम कर विश्व मानव बनने का प्रयास कर रहा है। मानव मूल्य विश्व धरोहर बन रहे है।[7]

भावी मानव, विश्व मानव होगा, वह न पूर्व का होगा, न पश्चिम का वह देश और विभेदों को अतिक्रम कर अन्तश्चेतना से सम्पन्न होगा। वह वर्तमान दूषित परम्पराओं एवं विकृतियों को अस्वीकार कर विज्ञान को अपना वाहन बनाकर कालविद अत्याधुनिक मानव होगा।[8]

भारत को बाह्य जगत के साथ–साथ अन्तर्जगत की शक्तियों का भी ज्ञान है। वह भौतिक शक्तियों के महत्व तथा उनकी उपयोगिता को स्वीकार करता है किन्तु उनको सर्वोपरि नहीं मानता है। उसे बुद्धि और मन के साथ ही उच्च ज्योतिर्मय सत्य का भी ज्ञान है। आध्यात्मिकता के साथ ही उसमें प्रखर बौद्धिकता तथा जीवन आनन्द की उर्वर प्राण शक्ति भी है। उसने अपनी बहुमुखी बौद्धिकता से मानव जीवन के सत्य का सूक्ष्म विश्लेषण करके, उसे युगानुरुप, अनेक दर्शन तथा सामाजिक विज्ञान के रुप में प्रस्तुत किया है। अतः 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से सम्पन्न, भारतीय संस्कृति ही नये मानव मूल्य की अवतरण भूमि होगी।[9]

संदर्भ –

1. छायावाद पुनर्मूल्यांकन : सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली खण्ड छह पृष्ठ 99 द्वितीय संस्करण 1980 ई. राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
2. छायावाद पुनर्मूल्यांकन : सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली खण्ड छह पृष्ठ 132
3. जीवन के अनुभव और उपलब्धियाँ सुमित्रानंदन ग्रंथावली खण्ड छह पृष्ठ 62
4. छायावाद पुनर्मूल्यांकनः सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली खण्ड छह पृष्ठ 136–37
5. चरण चिन्ह : सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली खण्ड छह पृष्ठ 321–22
6. छायावाद पुनर्मूल्यांकनः सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली खण्ड छह पृष्ठ 133–34
7. मानववादी विचारभूमि : सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली खण्ड छह पृष्ठ 408–09
8. चरण चिन्ह : सुमित्रानंदन ग्रंथावली खण्ड छह पृष्ठ 326
9. मेरी मनोकामना का भारत : सुमित्रानंदन पंत ग्रंथावली खण्ड छह पृष्ठ 470–74